International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-11-2021, Accepted: 15-12-2021, Published: 30-12-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 120-121

बिहारीलाल के काव्य की रचनाधर्मिता

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय रीतिकाल के प्रतिनिधि रीतिसिद्ध कवि बिहारीलाल रचित काव्य के बहुआयामी पक्षों का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत करना है। रीतिकाल के अन्य कवियों का ध्यान जहाँ शिल्प पक्ष पर प्रायः अधिक रहा, वहीं बिहारी के यहाँ अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष दोनों का आधार मज़बूत है । शोध–आलेख का ध्येय बिहारीलाल के काव्य में निहित नीति,भक्ति एवं शृंगार की त्रिवेणी सहित वर्तमान सन्दर्भों में सार्थकता की खोज करना रहा है ।

मूल शब्दः रीतिकाल, रीतिसिद्ध, सार्थकता, प्रासंगिकता, शिल्प, सृजनात्मकता

प्रस्तावना

आप हिंदी साहित्येतिहास के मूल पर ध्यान केंद्रित करें तो स्पष्ट ही देखा जा सकता है कि संपूर्ण साहित्येतिहासिक परंपरा में सूरदास–सूर्य, तुलसीदास–चंद्रमा, केशव–नक्षत्र तथा बिहारी इन सबके प्रतिबिंब की प्रतिच्छाया में प्रतिबिंबित सिरमौर हैं।

कवि बिहारीलाल का काव्य वर्तमान युग में भी सार्थकता लिए हुए है। उनका वर्णन रीतिकाल में ही नहीं अपितु आज भी पाठकों के हृदय को प्रभावित करता है। उनको यूँ ही 'गागर में सागर' भरने वाला कवि नहीं माना गया। बिहारीलाल के काव्य–चमत्कार का ही प्रभाव है जो उन्हें रीतिकाल के कवियों की पंक्ति में सर्वश्रेष्ठ कवि की पंक्ति में स्थान प्रदान किया गया। बिहारीलाल का भक्ति काव्य आराध्य देव श्रीकृष्ण को समर्पित है। उनके शृंगार पक्ष में भी राधा–कृष्ण के प्रेम की प्रतिच्छाया दिखाई देती है। इसे देख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा था –

> "शृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं।"

बिहारीलाल के काव्य में अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करता है। इनकी तुलना किसी अन्य कवि से करना व्यर्थ सिद्ध होगा। नायिका के रूप–चित्र उकेरने में बिहारी सिद्धहस्त थे। इसमें इन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली। बिहारी ने अन्य क्षेत्रों में भी अपनी बुद्धि चातुर्यता का परिचय दिया। इनके काव्य में भक्ति नीति, ज्योतिष, गणित दर्शन आदि के जीवंत प्रमाण मौजूद हैं। शब्द–शक्ति प्रयोग के क्षेत्र में बिहारीलाल की अन्यत्र प्रतिस्पर्धा नहीं है।

कवि बिहारीलाल के काव्य में छंदयुक्त सृजनात्मकता के अनेक प्रयोग प्राप्त होते हैं किंतु इन्हें दोहा छंद प्रिय है। बिहारीलाल ने यदा–कदा ही सोरठा छंद का प्रयोग किया है।

> 'मैं लखि नारी ज्ञानु, करि राख्यौ निरधारू यह।
> वहई रोग–निदानु, वहै बैदु औषधि वहै।।'

वर्तमान काल की सृजन प्रतिभाएँ बिहारी के काव्य की भी देन हैं। 'बिहारी सतसई' ने इन्हें हिंदी साहित्यकाश में ध्रुव तारे के समान स्थापित किया है। जिस प्रकार आकाश में नक्षत्र उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं। उसी प्रकार शृंगारिक कवि बिहारी के चारों ओर परिक्रमा करते प्रतीत होते हैं।

कवि बिहारीलाल के संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं –

> "इनके दोहे क्या हैं रस के छोटे–छोटे छींटे हैं।"[2]

कवि बिहारीलाल के इष्ट देव श्रीकृष्ण थे। उन्होंने राधा वल्लभ संप्रदाय के अनुसार ही भक्ति की है। इसमें पूर्णतः इनकी आत्मसमर्पण भावना दृष्टिगोचर होती है। वे राधा को संबोधित करते हुए कहते हैं कि –

> 'मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय,
> जा तन की छांई परै, श्याम हरित दुति होय।।'

मध्यकालीन दौर में स्त्री मनेविज्ञान सहित मानवीय मनोविज्ञान के अनेक सजीव चित्र बिहारी उकेरते हैं। एक साधारण नायक–नायिका के प्रेमालाप को वर्णित करते हुए वह कहते हैं –

> कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
> भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात।।

जिन चित्रों को अन्य कवि अनेकानेक पंक्तियों में व्यक्त न कर सके, उसको महाकवि बिहारीलाल ने मात्र दो पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त कर दिया। इसी प्रकार बिहारीलाल ने वियोग शृंगार के वर्णन में भी सिद्धहस्तता हासिल की थी–

> औधाई सीसी, सु लखि बिरह–बरनि बिललात,
> विच हीं सूखि गुलाबु गौ, छीटौ हुई न गात।

पं० पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी लाल के काव्य की सराहना करते हुए लिखा है कि – बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जलधारा के समान है, जो शिव की जटाओं में तो समा गई थी, परंतु उसके बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गई कि लंबी–चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रस के सागर हैं, कल्पना के इन्द्रधनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौंदर्य के मादक चित्र अंकित हैं।

बिहारीलाल की काव्य–प्रतिभा के संदर्भ में आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखते हैं – "उत्तर मध्यकाल की रीति काव्य माला के

सुमेरू हैं बिहारीलाल। उन्होंने कम लिखा है, लेकिन खूब लिखा है।"[3]

ग्रियर्सन बिहारीलाल को 'भारत का थाम्प्सन' मानते थे। बिहारीलाल वह पारसमणि थे जिन्होंने महाराजा जयसिंह को उनका कर्त्तव्य पथ स्मरण दिलाया था –

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल,
अली कली ही सौं बंध्यों, आगे कौन हवाल।

रीतिकालीन कवि बिहारीलाल हिंदी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं जिन्होंने केवल एक ग्रंथ लिखकर ही रीतिकाल में रीति सिद्ध कवि के रूप में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। दोहे जैसे छोटे–छोटे छंद में इन्होंने एक साथ अनेक भावों को गूंथ दिया था। भाव और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से इनका काव्य महान है। इनके दोहे सीधा–हृदय में उतर जाते हैं। इनके दोहों के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है –

सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर,
देखन में छोटे लगै घाव करैं गंभीर।

इस संदर्भ में श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' लिखते हैं –
"ब्रजभाषा के कवियों तथा प्रेमियों में ऐसा कोई विरला ही व्यक्ति होगा, जो बिहारी की सतसई से परिचित न हो, या जिसने उसके दो–चार दोहे भी सादर और सप्रेम पढ़–सुन कर हृदय से प्रशंसा न की हो।"

निष्कर्ष

अस्तु, महाकवि बिहारीलाल का एक–एक दोहा अनगिनत स्वर्ण मुद्राओं से भी अधिक मूल्यवान हैं। शृंगार–भक्ति–रीति के कवि के रूप में महाकवि बिहारीलाल संपूर्ण हिंदी साहित्येतिहासिक आकाश में युगों–युगों तक ध्रुव नक्षत्र के समान आलोकित रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्लः पुनरावृत्तिः 2013ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–168
2. हिंदी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्लः पुनरावृत्तिः 2013ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–169
3. हिंदी साहित्येतिहास की भूमिका (भाग–2) – मध्यकालः प्रो० (डॉ०) सूर्यप्रसाद दीक्षितः प्रथम संस्करणः 2008ः उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ–222
4. कविवर बिहारीः श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'ः प्रथम संस्करणः 1953ः ग्रंथकार प्रकाशन, बनारस, पृष्ठ–1